॥ श्रीः ॥

प्रश्नोत्तरमुक्तावली ।

(भाषाटीकासहित)

जिसमें

अतिश्रेष्ठ १२२ प्रश्न और उनके यथार्थ उत्तर हैं.

जिसको

पण्डित सरयूप्रसाद शर्म्मा बाजपेयी निवासस्थान ग्राम गौरीलखा परगना शिवराजपुर प्रांत जिला कानपुरने सर्व साधारण मनुष्योंके हितके लिये अति सुंदर भाषाटीकासे शोभित किया ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६६, शके १८३१

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ प्रश्नोत्तरमुक्तावली-

प्रारम्भः ।

प्रश्न-किंस्विदादित्यमुन्नयाति केच त-
स्याभितश्चराः ॥ कश्चैनमस्तंनयाति
कस्मिंश्च प्रतितिष्ठति ॥ १ ॥

अर्थ-(प्रश्न) सूर्य्यको उदयकर्त्ता कौनहै १
और सूर्य्यके आसपास चारों ओर चलनेवाले
कौन हैं २ तथा सूर्य्यको अस्तकर्त्ता कौनहै ३
और सूर्य्य किसमें स्थित होता है ४ ॥ १ ॥

उत्तर-ब्रह्मादित्यमुन्नयाति देवास्तस्या
भितश्चराः ॥ धर्म्मश्चास्तं नयत्येनं
सत्ये च प्रतितिष्ठति ॥ २ ॥

अर्थ-(उत्तर) सूर्य्यको उदयकर्त्ता ब्रह्म है १ और सूर्य्यके आसपास चलनेवाले देवताहैं २ तथा सूर्य्यको अस्तकर्त्ता धर्म्म है ३ और सूर्य्य सत्यमें स्थित होता है ४ ॥ २ ॥

प्रश्न-केनस्विच्छ्रोत्रियो भवति केन-
स्विद्विन्दते महत् ॥ केनस्विद्द्वितीय-
वान्भवति राजन्केनच बुद्धिमान् ॥ ३ ॥

अर्थ-(प्रश्न) किस कर्म्मसे श्रोत्रिय होता-है ५ और किससे महत्पदको प्राप्त होताहै ६ तथा किससे द्वितीयवान् अर्थात् दूसरे सहायी सहित होता है ७ और किस कर्म्मसे बुद्धिमान् होताहै ८ ॥ ३ ॥

उत्तर-श्रुतेन श्रोत्रियो भवति तपसा
विन्दते महत् ॥ धृत्या द्वितीयवान् भव
ति बुद्धिमान् वृद्धसेवया ॥ ४ ॥

अर्थ-(उत्तर) वेदादि शास्त्रोंके पढनेसे श्रोत्रिय होता है ५ और तप करनेसे महत्पदको प्राप्त होता है ६ तथा धैर्य्य होनेसे द्वितीयवान् होता है ७ और वृद्ध (श्रेष्ठ) पुरुषोंकी सेवा सत्संगसे बुद्धिमान् होता है ८ ॥ ४ ॥

प्रश्न-किं ब्राह्मणानां देवत्वं कश्च धर्म्मः सतामिव ॥ कश्चैषां मानुषो भावः किमेषामसतामिव ॥ ५ ॥

अर्थ-(प्रश्न) ब्राह्मणोंका देवत्व क्या है ९ और ब्राह्मणोंका सज्जनोंका ऐसा धर्म्म क्या है १० तथा इन ब्राह्मणोंका मनुष्यभाव क्या है ११ और इनमें दुष्ट भाव क्या है १२ ॥ ५ ॥

उत्तर-स्वाध्याय एषां देवत्वं तप एषां सतामिव ॥ मरणं मानुषो भावः परिवादोऽसतामिव ॥ ६ ॥

अर्थ-(उत्तर) ब्राह्मणोंका देवत्व स्वाध्याय (वेदादि शास्त्रका पढ़ना पढ़ाना) है ९ और ब्राह्मणोंमें सज्जनोंका ऐसा धर्म्म तप है १० तथा इन ब्राह्मणोंका मनुष्यभाव मरना है ११ और देवता ब्राह्मणादिकी निन्दा करना ही इनमें दुष्ट-भाव है १२ ॥ ६ ॥

प्रश्न-किं क्षात्रियाणां देवत्वं कश्च धर्म्मः सतामिव ॥ कश्चैषां मानुषो भावः कि-मेषामसतामिव ॥ ७ ॥

अर्थ-(प्रश्न) क्षात्रियोंका देवभाव क्या है १३ और क्षत्रियोंमें सज्जनोंका ऐसा धर्म्म क्या है १४ तथा इन क्षत्रियोंमें मनुष्यभाव क्या है १५ और इन क्षत्रियोंमें दुष्टभाव क्या है १६ ॥ ७ ॥

उत्तर-इष्वस्त्रमेषां देवत्वं यज्ञ एषां स-तामिव ॥ भयं वै मानुषो भावः परि-त्यागोऽसतामिव ॥ ८ ॥

अर्थ-(उत्तर) क्षत्रियोंका देवभाव धनुः-शास्त्र विद्या जानना है १३ और क्षत्रियोंमें सज्ज-नोंका धर्म्म यज्ञ करना है १४ तथा इन क्षत्रियों-में भय करना मनुष्यभाव है १५ और इन क्षत्रि-योंमें पीडित शरणागतको रक्षा न करके त्याग करना दुष्टभाव है १६ ॥ ८ ॥

प्रश्नः-किमेकं यज्ञियं साम किमेकं य ज्ञियं यजुः ॥ काचैषा वृणुते यज्ञं कां यज्ञो नातिवर्तते ॥ ९ ॥

अर्थ-(प्रश्न) ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी सामवेद क्या है १७ और ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी यजुर्वेद क्या है १८ तथा इस ज्ञानयज्ञको कौन आच्छादन करता है १९ और यह ज्ञानयज्ञ किसको उल्लं-घन नहीं कर्ताहै ॥ २० ॥ ९ ॥

उत्तर-प्राणो वै यज्ञियं साम मनो वै यज्ञियं यजुः॥ ऋगेका वृणुते यज्ञं तां यज्ञो नातिवर्त्तते॥ १०॥

अर्थ-(उत्तर) ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी सामवेद प्राणायाम है १७ और ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी यजुर्वेद मनका एकाग्र करना है १८ तथा इस ज्ञानयज्ञको ऋग्वेदादि शास्त्रोंकी वाणी ही उपदेशरूप होकर आच्छादन करती है १९ और यह ज्ञानयज्ञ उसी वाणीको ही नहीं उल्लंघन करता है२०॥१०

प्रश्न-किंस्विदावपतां श्रेष्ठो किंस्विन्निवपतांवरम्॥ किंस्वित्प्रतिष्ठमानानां किंस्वित्प्रसवतांवरम्॥ ११॥

अर्थ-(प्रश्न) बोनेंवालोंको क्या श्रेष्ठ है २१ और बोनेमें क्या श्रेष्ठ है २२ तथा प्रतिष्ठा कर-

नेवालोंमें कौन श्रेष्ठ है २३ और उत्पन्न होनेवालोंमें क्या श्रेष्ठ है २४ ॥ ११ ॥

उत्तर—वर्षामावपतां श्रेष्ठं बीजं निवपतां वरम् ॥ गावः प्रतिष्ठमानानां पुत्रः प्रसवतां वरम् ॥ १२ ॥

अर्थ—(उत्तर) बोनेंवालोंको वर्षा श्रेष्ठ है२१ ओर बोनेंमें बीज श्रेष्ठः है २२ तथा प्रतिष्ठा करनेंवालोंमें गौवें श्रेष्ठ हैं २३ और उत्पन्न होनेंवालोंमें पुत्र श्रेष्ठ है २४ ॥ १२ ॥

प्रश्न—इन्द्रियार्थाननुभवन्बुद्धिमाल्लोकपूजितः ॥ संमतः सर्वभूताना-मुच्छ्वसन्को न जीवति ॥ १३ ॥

अर्थ(प्रश्न) इन्द्रियोंके रूप रस गंध स्पर्श शब्द आदि विषयोंको जानता हुआ, बुद्धिमान्

और लोकमें सन्मानकोभी प्राप्त तथा सब जीवों-को सम्मत और श्वास प्रश्वास लेता हुआ भी ऐसा कौनहै जो जीता नहीं है अथात् मृतकके समान है २८॥ १३॥

उत्तर-देवतातिथिभृत्यानां पितृणा-
मात्मनश्च यः॥ न निर्वपति पंचाना
मुच्छ्सन्नसजीवाति॥ १४॥

-अर्थ-(उत्तर) देवता, अतिथि, भृत्य (से-वकवर्ग) पितर और आत्मा (निज शरीर) इन पांचोंको जो यथायोग्य पदार्थोंसे सत्कार आदि नहीं करता है सो ऐसा मनुष्य श्वासके लेते हुए भी नहीं जीता है अर्थात मृतकके समान है २८॥ १४॥

प्रश्नः-किंस्विद्गुरुतरं भूमेःकिंस्विदुच्चतरं च खात्॥ किंस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद्बहुतरं तृणात्॥ १५॥

अर्थ-(प्रश्न) पृथ्वीसे गुरुतर अत्यन्त श्रेष्ठ गौरवयुक्त कौन है २६ और आकाशसे उच्चतर अत्यन्त बड़ा श्रेष्ठ कौन है २७ तथा वायुसे भी शीघ्रतर अत्यन्त वेगवान् कौन है २८ और तृण से भी बहुतर अधिक समूहयुक्त क्या है २९॥१५॥

उत्तर-माता गुरुतरा भूमेः खात्पितोच्चतरस्तथा॥ मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात॥ १६॥

अर्थ-(उत्तर) पृथिवीसे गुरुतरा अत्यन्त श्रेष्ठ गौरयुक्त माता है २६ और आकाशसेभी उच्चतर अत्यन्त बड़ा श्रेष्ठ पिता है २७ तथा

वायुसे भी शीघ्रतर वेगयुक्त मन है २८ और तृण से भी अधिक बहुतर चिन्ताका समूहहै२९॥१६॥

प्रश्न–किंस्वित्सुप्तं न निमिषति किं स्विज्जातं न चोपति ॥ कस्यास्विद्धृदयंनास्ति किंस्विद्वेगेन वर्द्धते ॥ १७ ॥

अर्थ–(प्रश्न) सोता हुआ कौन आंख नहीं मिचताहै ३० और उत्पन्न होके स्वयं कौन नहीं चलता है ३१ तथा किसके हृदय नहीं है ३२ और वेगसे कौन वृद्धिको प्राप्त होता है ३३ ॥ १७ ॥

उत्तर–मत्स्यः सुप्तो न निमिषत्यंडं जातं न चोपति ॥ अश्मनो हृदयं नास्ति नदी वेगेन वर्द्धते ॥ १८ ॥

अर्थ–(उत्तर) सोते हुये मत्स्य (मच्छली) आंख नहीं मीचतीहै ३०और उत्पन्न होके अण्डा

स्वयं नहीं चलताहै ३१ तथा पत्थरके हृदय नहीं है ३२ और नदी वेगसे बढती है ३३ ॥ १८॥

प्रश्न–किंस्वित्प्रवसतो मित्रं किंस्वि
न्मित्रं गृहे सतः ॥ आतुरस्यचकिंमि-
त्रं किंस्विन्मित्रं मरिष्यतः ॥ १९ ॥

अर्थ–(प्रश्न) परदेशीका मित्र कौन है ३४ और घरमें मित्र कौनहै ३५ तथा रोगीका मित्र कौन है ३६ और आसन्न मरणवालेका मित्र कौन है ३७ ॥ १९ ॥

उत्तर–सार्थः प्रवसतो मित्र भार्य्या मि
त्रं गृहे सतः ॥ आतुरस्य भिषङ्मित्रं
दानं मित्रं मरिष्यतः ॥ २० ॥

अर्थ–(उत्तर) परदेशीका मित्र साथियों-का समूहहै ३४ और घरमें अपनी स्त्री मित्रहै ३५

तथा रोगीका मित्र वैद्य है ३६ और शीघ्र मरनेवालेका दान देना ही मित्र (सुखदायक) है ३७ ॥ २० ॥

प्रश्नः-कोऽतिथिः सर्वभूतानां किंस्वि
द्धर्म्मं सनातनम् ॥ अमृतं किस्विद्रा
जेन्द्र किंस्वित्सर्वमिदं जगत् ॥२१॥

अर्थ-(प्रश्न) सर्व प्राणसमूहका अतिथि कौन है ३८ और सनातन धर्म्म क्याहैं ३९ तथा हे राजन्! अमृत(मोक्षप्राप्ति)का हेतु क्या है ४० और सर्व जगत्का आधार मुख्य कौन है४१॥२१

उत्तर-अतिथिः सर्वभूतानामग्निः सो
मो गवामृतम् ॥ सनातनोऽमृतो
धर्म्मो वायुः सर्वमिदं जगत् ॥ २२॥

अर्थ-(उत्तर) सब जीवोंका अतिथि अग्नि है ३८ और गौके अमृतसमान दुग्ध घृतादिसे

होम यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करना सनातन धर्म्म है३९ तथा अमृत (मोक्षप्राप्ति)का हेतु धर्म्म है ४० और सर्वजगत्का जीवन आधाररूप मुख्य वायु- है ४१ ॥ २२ ॥

प्रश्न–किंस्विदेको विचरते जातको
जायते पुनः॥ किस्विाद्धिमस्य भैषज्यं
किस्विदावपनं महत्॥ २३॥

अर्थ–(प्रश्न) अकेला कौन घूमता है ४२ और उत्पन्न होकर पुनः कौन उत्पन्न होताहै ४३ तथा शीतकी औषध क्या है ४४ और बोनेके लिये बडा श्रेष्ठस्थान क्या है॥ ४५॥ २३॥

उत्तर–सूर्य्य एको विचरते चन्द्रमा
जायते पुनः ॥ अग्निर्हिमस्य भैषज्यं
भूमिरावपनं महत्॥ २४॥

अर्थ-(उत्तर) अकेला सूर्य्य घूमताहै ४२ और चन्द्रमा बारम्बार उत्पन्न होताहै ४३ तथा शीतकी औषधि अग्नि है ४४ और बोनेके लिये श्रेष्ठ बडा स्थान पृथिवी है ४५ ॥ २४ ॥

प्रश्न-किंस्विदेकपदं धर्म्यं किंस्विदे कपदंयशः ॥ किंस्विदेकपदं स्वर्ग्यं किंस्विदेकपदं सुखम् ॥ २५ ॥

अर्थ-(प्रश्न) धर्म्मका श्रेष्ठ एकपद क्या है ४६ और यशका श्रेष्ठ एकपद क्या है ४७ तथा स्वर्ग प्राप्तिका श्रेष्ठ एकपद क्या है ४८ और सुख देनेवाला एक पद क्या है ४९ ॥ २५ ॥

उत्तर-दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यं दानमेक-पदं यशः ॥ सत्यमेकपदं स्वर्ग्यं शील-मेकपदं सुखम् ॥ २६ ॥

अर्थ-(उत्तर) धर्म्मका श्रेष्ठ एकपद ब्रह्मज्ञान है ४६ और यशका श्रेष्ठ एकपद (स्थान) दान देना है ४७ तथा स्वर्गप्राप्तिका श्रेष्ठ एकपद सत्याचरण है ४८ और सुख देनेवाला एकपद शील श्रेष्ठ स्वभाव होना है ४९ ॥ २६ ॥

प्रश्न--किंस्विदात्मा मनुष्यस्य किंस्वि-
द्दैवकृतः सखा ॥ उपजीवनं किंस्वि-
दस्य किंस्विदस्य परायणम् ॥ २७ ॥

अर्थ--(प्रश्न) मनुष्यका आत्मा क्या है ५० और पुरुषका देवकृत मित्र कौन है ५१ तथा इस मनुष्यादिका उपजीवन क्या है ५२ और मनुष्यका परायण क्या है ५३ ॥ २७ ॥

उत्तर--पुत्र आत्मा मनुष्यस्य भार्य्या
देवकृतः सखा॥उपजीवनं च पर्जन्यो
दानमस्य परायणम् ॥ २८ ॥

अर्थ-(उत्तर) मनुष्यका आत्मा पुत्र है ५० और पुरुषका दैवकृत मित्र स्वस्त्री है ५१ तथा इस मनुष्यादिका उपजीवन मेघ है ५२ और मनुष्यके परायण श्रेष्ठ दान देना है ५३ ॥ २८॥

प्रश्नः--धन्यानामुत्तमं किंस्विद्धनानां
स्यात्किमुत्तमम् ॥ लाभानामुत्तमं कि-
स्वित्सुखानां स्यात्किमुत्तमम् ॥ २९॥

अर्थ-(प्रश्न) धन्यके हितोमें उत्तम क्या हैं ५४ और धनोंमें श्रेष्ठ धन क्या हैं ५५ तथा लाभोंमें उत्तम लाभ क्या है ५६ और सुखोंमें उत्तम सुख क्या है ५७ ॥ २९ ॥

उत्तर-धन्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनाना-
मुत्तमं श्रुतम् ॥ लाभानां श्रेय आरो
ग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा ॥ ३० ॥

अर्थ-(उत्तर) धन्यके हितोंमें उत्तम निपुणता है ५४ और धनोंमें श्रेष्ठ धन विद्या वेदादि शास्त्र पढना है ५५ तथा लाभोंमें श्रेष्ठ लाभ आरोग्यता है ५६ और सुखोंमें उत्तम सुख तृष्णाका नाश और सन्तोष है ५७॥ ३०॥

प्रश्नः-कश्च धर्म्मः परो लोके कश्च धर्म्मः सदाफलः॥ किं नियम्य न शोचन्ति कैश्च सन्धिर्न जायते॥ ३१॥

अर्थ-(प्रश्न) इस लोकमें सबसे श्रेष्ठ धर्म्म क्या है ५८ और कौन धर्म सदा उत्तम सुखादि फल देनेवाला है ५९ तथा किसको नियममें (जीत) करके शोच नहीं करना होताहै ६० और किनके साथ करी हुई सन्धि (मेल) नहीं नाश होतीहै॥ ६१॥ ३१॥

उत्तर–आनृशंस्यं परो धर्म्मस्त्रयीध-
र्म्मः सदाफलः॥ मनो यस्य न शोच
न्ति सद्भिः सन्धिर्न जीर्य्यते ॥ ३२ ॥

अर्थ–(उत्तर) आनृशंस्य अर्थात् दयालु होकर सब जीवोंको अभय देना (अहिंसा वैर-त्याग किसीको दुःख न देना न मारना) यही सबसे श्रेष्ठ धर्म्म है ५८ और वेदोक्त धर्म्म सदा सुखादि श्रेष्ठ फलको देनेवाला है ५९ तथा मन-को जीत कुमार्गसे हटाय ईश्वराादि श्रेष्ठ विषयमें लगाकर शोच करना नहीं पड़ता है ६० और सज्जनोंके साथ करी भई मित्रता बहुधा विनाश नहीं होतीहै ॥ ६१ ॥ ३२ ॥

प्रश्न–किंनु हित्वा प्रियो भवति किंनु
हित्वा न शोचति॥किंनु हित्वार्थवान्भ-
वति किंनु हित्वा सुखी भवेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ-(प्रश्न) मनुष्य किसको त्यागकर सबको प्रिय होताहै ६२ और किसको त्यागकर शोच नहीं करताहै ६३ तथा किसको त्यागकर धनी होताहै ६४ और किसको त्यागकर सुखी होताहै ॥ ६५ ॥ ३३ ॥

उत्तर-मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं
हित्वा न शोचति॥ कामं हित्वार्थवा-
न्भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत्॥३४॥

अर्थ-(उत्तर) मनुष्य अभिमान त्यागकर सबको प्रिय होताहै ६२ और क्रोधका त्यागकर शोच नहीं करता है ६३ तथा काम अत्यन्त अभिलाषा तृष्णाका त्यागकर धनी होताहै ६४ और लोभका त्यागकर सुखी होताहै ६५ ॥ ३४ ॥

प्रश्न-किमर्थं ब्राह्मणे दानं किमर्थं नट-

नर्त्तके ॥ किमर्थं चैव भृत्येषु किमर्थं चैव राजसु ॥ ३५ ॥

अर्थ-(प्रश्न) ब्राह्मणनको धनादि पदार्थोंका दान किसलिये दिया जाताहै ६६ और नट नर्त्तक आदिको किसलिये धनादि देते हैं ६७ तथा भृत्यों (सेवाकरनेवालों)को किसवास्ते धनादि दिया जाता है ६८ और राजाको किस लिये धन देते-हैं ॥ ६९ ॥ ३५ ॥

उत्तर-धम्माय ब्राह्मणे दानं यशोर्थं नटनर्त्तके ॥ भृत्येषु भरणार्थं वै भयार्थं चैव राजसु ॥ ३६ ॥

अर्थ-(उत्तर) ब्राह्मणोंको धनादि दान धर्म्मके लिये दिया जाताहै ६६और नट नर्त्तकादिकोंको यशके लिये धनआदि देतेहैं ६७ तथा सेव-

कोंको पालनके लिये धन दियाजाताहै६८ और राजाको भयके कारण धन देतेहैं ६९ ॥ ३६ ॥

प्रश्न–केनास्विदावृतो लोकः केनास्विन्न प्रकाशते ॥ केन त्यजति मित्राणि केन स्वर्गं न गच्छति ॥ ३७ ॥

अर्थ–(प्रश्न) यह लोक किससे आच्छादित है ७० और किससे प्रकाशित नहीं होताहै ७१ तथा किस कारणसे मित्रोंको त्याग करताहै ७२ और किसके होनेसे स्वर्गादि श्रेष्ठ सुखको नहीं प्राप्त होताहै ७३ ॥ ३७ ॥

उत्तर–अज्ञानेनावृतो लोकस्तमसा न प्रकाशते ॥ लोभात्त्यजति मित्राणि सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति ॥ ३८ ॥

अर्थ–(उत्तर) यह लोक अज्ञानसे आच्छादित है ७० और उसही अज्ञानरूप अन्धकारसे

प्रकाशित नहीं होताहै ७१ तथा लोभ होनेके कारणसे मित्रोंका त्याग करताहै ७२ और दुष्ट विषयोंमें आसक्ति होनेसे स्वर्गसुखको नहीं प्राप्त होताहै ७३ ॥ ३८ ॥

प्रश्न–मृतः कथं स्यात्पुरुषः कथं राष्ट्रं मृतं भवेत् ॥ श्राद्धं मृतं कथं वा स्यात्कथं यज्ञो मृतो भवेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ–(प्रश्न) मृतकके समान जीता पुरुष कैसे होताहै ७४ और राज्यदेश मृतकके समान कैसे होताहै ७५ तथा श्राद्ध मृतक कैसे होता है ७६ और यज्ञ मृतक कैसे होतेहैं ७७ ॥ ३९ ॥

उत्तर–मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं राष्ट्रमराजकम् ॥ मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः ॥ ४० ॥

अर्थ-(उत्तर) दरिद्री (धनहीन) पुरुष मृतकके समान है ७४ और राजाके विना देश मृतकके समान होताहै ७५ तथा श्रोत्रिय अर्थात् वेदादि शास्त्रके जाननेवाले विद्वानके विना श्राद्ध मृतक होताहै ७६ और दक्षिणा रहित यज्ञ मृतक होताहै ७७॥४०॥

प्रश्न-का दिक्किमुदकं प्रोक्तं किमन्नं किं च वै विषम् ॥ श्राद्धस्य कालमाख्याहि ततः पिब हरस्व च॥४१॥

अर्थ-(प्रश्न) उपदिशन्तीति दिक् उपदेशकरने योग्य कौन है ७८ और जगत्का जलादि आधार क्या है ७९ और जगत्को अन्नादि भोजन देनेवाला कौन है ८० और विषके समान क्या है ८१ तथा श्राद्धका समय कहिये तब जलपीजियेगा ८२॥४१॥

उत्तर–सन्तो दिग्जलमाकाशं गौरन्नं प्रार्थना विषम् ॥ श्राद्धस्य ब्राह्मणः कालः कथं वा यक्ष मन्यसे ॥ ४२ ॥

अर्थ–(उत्तर) सज्जन मनुष्यही उपदेश करने योग्य होतेहैं ७८ और जलादि सब जगत्का आधार आकाश है ७९ तथा जगतको शुद्ध अन्नादि भोजन देनेंवाली गौ है ८० ॥ और मांगना दूसरैसे याचना करना विषके समान है ८१ और श्राद्धका समय उत्तम ब्राह्मण है ८२ हे यक्ष ! आप कैसा मानते हो ? ॥ ४२ ॥

प्रश्न–तपः किं लक्षणं प्रोक्तं को दमश्च प्रकीर्त्तितः ॥ क्षमा च का परा प्रोक्ता काच ह्रीः परिकीर्त्तिता ॥ ४३ ॥

अर्थ–(प्रश्न) तपका लक्षण क्या है ८३ और दम किसको कहते हैं ८४ तथा श्रेष्ठ क्षमा

किसको कहते हैं ८५ और लज्जा कौन कही जाती है ८६ ॥ ४३ ॥

उत्तर-तपः स्वधर्म्मवर्त्तित्वं मनसो दमनं दमः ॥ क्षमाद्वंद्वसहिष्णुत्वं ह्रीरकार्य्यनिवर्त्तनम् ॥ ४४ ॥

अर्थ-(उत्तर) अपनें धर्म्ममें सदा श्रेष्ठतासे वर्त्तते रहना तपका लक्षण है ८३ और मनके जीतनेको दम कहते हैं ८४ तथा शीत, उष्ण, क्षुधा, पिपासा आदि द्वन्द्वका सह लेना (अत्यन्त व्याकुल न होजाना) क्षमा है८५ और अकार्य्य दुष्ट पापादि कर्म्म निवृत्त होनेका नाम लज्जा है ८६ ॥ ४४ ॥

प्रश्न-किं ज्ञानं प्रोच्यते राजन् कः शमश्च प्रकीर्त्तितः ॥ दया च का परा प्रोक्ता किं चार्जवमुदाहृतम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-(प्रश्न) हे राजन्! ज्ञान किसको कहते-हैं ८७ और शम कौन कहाताहै ८८ तथा श्रेष्ठ दया क्या है ८९ और आर्जव किसको कहते हैं ९० ॥ ४५ ॥

उत्तर-ज्ञानं तत्वार्थसम्बोधः शमश्चित्त-
प्रशान्तता ॥ दया सर्वसुखैषित्वमार्ज-
वं समचित्तता ॥ ४६ ॥

अर्थ-(उत्तर) तत्त्व अर्थको अच्छी प्रकार जानलेना ज्ञान कहाता है ८७ और चित्तका तृ-ष्णादिसे निवृत्त होकर शान्त होना शम है ८८ तथा सब जीवोंको सुखकी इच्छा करना दया है ८९ और अपने तथा पराये जीवको तुल्य देखना आर्जव है ९० ॥ ४६ ॥

प्रश्न-कः शत्रुर्दुर्जयः पुंसां कश्च व्याधि-

रनन्तकः ॥ कीदृशश्च स्मृतः साधुर-
साधुः कीदृशः स्मृतः ॥ ४७ ॥

अर्थ-(प्रश्न) दुर्जय (दुःख और कठिनता-
से जीतनेके योग्य) शत्रु कौन है१ १और अनन्त
व्याधि कौन है १२ तथा साधु श्रेष्ठ सज्जन कौन-
है १३ और असाधु दुष्ट दुर्जन कैसा होता-
है १४ ॥ ४७ ॥

उत्तर-क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्या-
धिरनन्तकः॥ सर्वभूताहितः साधुरसा-
धुर्निर्दयः स्मृतः ॥ ४८ ॥

अर्थ-(उत्तर) क्रोधरूप शत्रु दुर्जय है ११
और लोभ यह अनन्त व्याधि है १२ तथा सब
जीवोंके कल्याण चाहने और करने वालेको
साधु कहते हैं १३ और निर्दयी (दयारहित)
मनुष्य दुष्ट होताहै १४ ॥ ४८ ॥

प्रश्न--को मोहः प्रोच्यते राजन्कश्च मानः प्रकीर्त्तितः ॥ किमालस्यं च विज्ञेयं कश्च शोकः प्रकीर्तितः ॥ ४९ ॥

अर्थः–(प्रश्न) मोह किसको कहतेहैं ९५ और मान किसको कहतेहैं ९६ तथा आलस्य किसको जानना चाहिये ९७ और शोक क्या है ९८ ॥ ४९ ॥

उत्तर--मोहो हि धर्म्ममूढत्वं मानस्त्वा-त्माभिमानिता ॥ धर्म्मान्निष्क्रियतालस्यं शोकस्त्वज्ञानमुच्यते॥ ५०॥

अर्थ–(उत्तर) धर्म्ममें मूढताको मोह कहतेहैं ९५ और आत्माका शरीरमें अभिमान करना मान कहाताहै ९६ तथा धर्म्माचरण न करनेको आलस्य कहतेहैं ९७ और अज्ञान ही शोक है ९८ ॥ ५० ॥

प्रश्न-किं स्थैर्य्यमृषिभिः प्रोक्तं किं च धैर्य्यमुदाहृतम् ॥ स्नानं च किं परं प्रोक्तं दानं च किमिहोच्यते ॥ ५१ ॥

अर्थ-(प्रश्न) ऋषि मुनि लोग स्थिरता किसको कहतेहैं ९९ और धैर्य्य किसको कहते हैं १००तथा श्रेष्ठ स्नान क्या कहाता है १०१ और दान श्रेष्ठ क्या है १०२ ॥ ५१ ॥

उत्तर-स्वधर्म्मे स्थिरता स्थैर्य्यं धैर्य्यमिन्द्रियनिग्रहः ॥ स्नानं मनोमलत्यागो दानं वै भूतरक्षणम् ॥ ५२ ॥

अर्थ-(उत्तर) स्वधर्म्ममें स्थिर होनेंको स्थिरता कहते हैं ९९ और इन्द्रियोंको जीतके वशमें रखना धैर्य्य कहाता है १०० तथा मनके मल राग द्वेष असत्यादिका त्याग करना श्रेष्ठ स्ना-

न कहाता है १०१ और जीवोंकी रक्षा अहिंसा अर्थात् किसी जीवको क्लेश न देना और न मारना यही श्रेष्ठ दान है १०२ ॥ ५२ ॥

प्रश्न–कः पण्डितः पुमान् ज्ञेयो नास्तिकश्च क उच्यते ॥ को मूर्खः कश्च कामः स्यात्को मत्सर इति स्मृतः ॥ ५३ ॥

अर्थ–(प्रश्न) किस पुरुषको पण्डित कहते-हैं १०३ और नास्तिक तथा मूर्ख किसको कहते-हैं १०४ और काम किसको कहते हैं १०५ और मत्सर क्या कहाता है १०६ ॥ ५३ ॥

उत्तर–धर्म्मज्ञः पण्डितो ज्ञेयो नास्तिको मूर्ख उच्यते ॥ कामः संसारहेतुश्च हृत्तापो मत्सरः स्मृतः ॥ ५४ ॥

अर्थ-(उत्तर) धर्मका जानने वाला और आचरण करने वाला पुरुष पण्डित कहाताहै १०३ और ईश्वर तथा परलोकादिको न मानने वाले-को मूर्ख और नास्तिक कहतेहैं १०४ संसारमें उत्पत्तिके हेतुको काम कहतेहैं १०५ और दूस-रेके सुख ऐश्वर्य्यादिको देखके हृदयमें सन्ताप होनेको मत्सर कहतेहैं १०६ ॥ ५४ ॥

प्रश्न-कोऽहंकार इति प्रोक्तः कश्च दम्भः प्रकीर्त्तितः॥किं तद्दैवं परं प्रोक्तं किं त-त्पैशुन्यमुच्यते ॥ ५५ ॥

अर्थ-(प्रश्न) अहंकार किसको कहते हैं १०७ और दम्भ किसको कहते हैं १०८ तथा श्रेष्ठ दैव (भाग्य) किसको कहते हैं १०९ और पिशुनता किसको कहते हैं ११० ॥ ५५ ॥

उत्तर–महाज्ञानमहंकारो दम्भो धर्म्म-
ध्वजोच्छ्रयः ॥ दैवं दानफलं प्रोक्तं पै-
शुन्यं परदूषणम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–(उत्तर) महा अज्ञानको अहंकार क-
हतेहैं १०७ और दूसरोंको दिखानेके लिये बडा
धर्म्मध्वज बनना दम्भ कहाता है १०८ तथा पू-
र्वमें किये हुए दान आदि पुण्य कर्म्मोंके फलको
श्रेष्ठ भाग्य कहते हैं १०९ और दूसरोंमें दोषारो-
पण करनेको पिशुनता कहते हैं ११० ॥ ५६ ॥

प्रश्न–धर्म्मश्चार्थश्च कामश्च परस्परवि-
रोधिनः॥एषां नित्यविरुद्धानां कथमे-
कत्र संगमः ॥ ५७ ॥

अर्थ–(प्रश्न) परस्पर विरुद्ध धर्म्म अर्थ और
काम इनका एकत्र संगम मिलकर एक जगहर-
हना कैसे होता है १११ ॥ ५७ ॥

उत्तर–यदा धर्म्मश्च भार्या च परस्पर-
वशानुगौ ॥ तदा धर्म्मार्थकामानां
त्रयाणामपि संगमः ॥ ५८ ॥

अर्थ–(उत्तर) जब धर्म्म और स्त्री ये दोनों परस्पर अविरुद्ध होकर अपने वशमें रहके चलें तब धर्म्म अर्थ और काम इन तीनोंका संगम एकत्र होताहै १११ ॥ ५८ ॥

प्रश्न–अक्षयो नरकः केन प्राप्यते भर-
तर्षभ ॥ एतन्मे पृच्छतः प्रश्नं तच्छी-
घ्रं वक्तुमर्हसि ॥ ५९ ॥

अर्थ–(प्रश्न) हे भरतके वंशमें श्रेष्ठ राजन् ! अक्षय नरक (महाघोर दुःख) को कौन प्राप्त होता है इसमें प्रश्नका उत्तर शीघ्रही आप कहनेके योग्य हैं ११२ ॥ ५९ ॥

उत्तर-ब्राह्मणं स्वयमाहूय याचमा
नमकिंचनम्॥पश्चान्नास्तीति यो ब्रूया-
त्सोऽक्षयं नरकं व्रजेत् ॥ ६० ॥

अर्थ-(उत्तर) याचना करनेंवाले दीन भि-क्षुक ब्राह्मणको जो अपनाहीसे बुलायके और देना कहकर पुनः अपमान करके कहे कि, हमारे पास कुछ देनेको नहीं है सो अक्षय नरका-दि घोर दुःखको प्राप्त होताहै ११२ ॥ ६० ॥

प्रश्न-वेदेषु धर्म्मशास्त्रेषु मिथ्या यो वै
द्विजातिषु ॥ देवेषु पितृधर्म्मेषु सोऽक्ष-
यं नरकं व्रजेत् ॥ ६१ ॥

अर्थ-(प्रश्न) वेद, धर्मशास्त्र, द्विजादि अर्था-त् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, देव और पितरोंके ध-र्म्म आदि इन सब विषयोंमें जो मिथ्या असत्या-

चरण करता है सो अक्षय नरकको प्राप्त होताहै ११२ ॥ ६१ ॥

उत्तर–विद्यमाने धने लोभाद्दानभोगविवर्जितः ॥ पश्चान्नास्तीति या ब्रूयात्सोऽक्षयं नरकं व्रजेत् ॥ ६२ ॥

अर्थ–(उत्तर) धनके विद्यमान होतेभी लोभ होनेके कारणसे जो दान और भोगरहित है ऐसेके पास जो कोई कुछ मांगने आता है अथवा धन विषयक कोई दूसरी बात कहै तो उत्तर देताहै कि हमारे कुछभी धन नहीं है ऐसे असत्य बोलनेवाला अक्षय नरकको प्राप्त होताहै ११२ ॥ ६२ ॥

प्रश्न–राजन्कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन वा ॥ ब्राह्मण्यं केन भवति प्रब्रूह्येतत्सुनिश्चितम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-(प्रश्न) हे राजन्! श्रेष्ठ कुलमें जन्म और श्रेष्ठ स्वधर्म्माचरण तथा स्वाध्याय अर्थात् वेदादि शास्त्रका पढ़ना पढ़ाना अथवा सुनना इन सब कर्म्मोंमेंसे किससे ब्राह्मणत्व होता है सो निश्चय करके कहिये ११२ ॥ ६३ ॥

उत्तर-शृणु यक्ष कुलंतात न स्वाध्यायो न च श्रुतम् ॥ कारणं हि द्विजत्वेच वृत्तमेव न संशयः ॥ ६४ ॥

अर्थ-(उत्तर) हे यक्ष! हे तात! सुनिये श्रेष्ठ कुलमें जन्म और स्वाध्याय वेदादि शास्त्रका पढ़ना पढ़ाना और सुनना ये कोई द्विजत्वके कारण नहीं हैं किन्तु श्रेष्ठतासे स्वधर्म्मका आचरण करना ही द्विजत्व अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यके भावके कारण हैं इसमें संशय नहींहै॥६४॥

वृत्तं यत्नेन संरक्ष्यं ब्राह्मणेन वि-
शेषतः ॥ अक्षीणवृत्तो न क्षीणो वृत्त-
तस्तु हतोहतः ॥ ६५ ॥

अथ- इससे अपने धर्म्म और श्रेष्ठ आच-
रणकी यत्नसे रक्षा करनी सबको योग्य है
और ब्राह्मणनको विशेष धर्मकी रक्षा करनी चा-
हिये क्योंकि जो धर्म्मयुक्त है वही श्रेष्ठ है और
जो स्वधर्म्माचरण रहित है वही ब्राह्मणत्वादि
रहित है ॥ ६५ ॥

पठकाः पाठकाश्चैव येचान्ये
शास्त्रचिन्तकाः ॥ सर्वे व्यसानिनो मू-
र्खा यः क्रियावान्सपण्डितः ॥ ६६ ॥

अर्थः—पढ़नेवाले और पढ़ानेवाले तथा
और भी शास्त्रकी चिन्तना करनेवाले ये सब,

श्रेष्ठ धर्म्माचरण रहित होंय तो व्यसनी और मूर्ख हैं किन्तु जो क्रियावान है सो पण्डित है ॥६६॥

चतुर्वेदोपि दुर्वृत्तः सशूद्रादतिरिच्यते ॥ योऽग्निहोत्रपरोदान्तः स ब्राह्मण इति स्मृतः ॥ ६७ ॥

अर्थ—चारों वेदोंको भी पढ़ा होय परन्तु दुष्ट आचरण पापादि कर्म्म करता होय तो यह शूद्रसेभी अतिनीच है किन्तु जो अग्निहोत्रादि श्रेष्ठ कर्म्म करता है और इन्द्रिय जीत है सो ब्राह्मण है ११३ ॥ ६७ ॥

प्रश्न—प्रियवचनवादी किं लभते विमृशितकार्य्यकरः किं लभते ॥ बहुमित्रकरः किं लभते धर्म्मे रतः किं लभते कथय ॥ ६८ ॥

अर्थ-(प्रश्न) प्रियवचन बोलनेवाले मनुष्यको क्या लाभ है ११४ और विचार करके कार्य करनेवालेको क्या लाभ है ११५ तथा बहुत मित्र करनेवालेको क्या लाभ है ११६ और श्रेष्ठ धर्म्ममें युक्त पुरुषको क्या लाभहै ११७॥६८॥

उत्तर-प्रियवचनवादी प्रियो भवति
विमृशितकार्यकरोऽधिकं जयति ॥
बहु मित्रकरः सुखं वसते यश्च धर्म्म-
रतः स गतिं लभते ॥ ६९ ॥

अर्थ-(उत्तर) प्रियवचन बोलनेवाला सबको प्रिय होताहै ११४ और विचार करके कार्य करनेवाला बहुधा जयको प्राप्त होता है अर्थात् कार्यको सिद्ध करता है ११५ तथा बहुत मित्र करनेवाला सुखसे वसताहै ११६ और श्रेष्ठ स्वध-

र्माचरण करनेवाला श्रेष्ठ गति स्वर्गादि सुखको प्राप्त होताहै ११७॥ ६९॥

प्रश्न-को मोदते किमाश्चर्य्यं कः पंथाः का च वार्तिका॥ इति मे चतुरः प्रश्नान्पूरयित्वा जलं पिब॥ ७०॥

अर्थ-(प्रश्न) आनन्दको प्राप्त कौन होताहै ११८ और आश्चर्य क्या है ११९ तथा श्रेष्ठमार्ग कौन है १२० और वार्त्ता क्या है १२१ इन चारों प्रश्नोंको पूर्ण करके तब जल पीजिये॥७०॥

उत्तर-दिवसस्याष्टमे भागे शाकं पचति स्वगृहे॥ अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते॥ ७१

अर्थ-(उत्तर) दिनके आठवें भागमें भी जो अपने घरमें शाक पकायकर भोजन करताहै

परंतु अनृणी अर्थात् ऋणसे रहित और अप्रवासी (परदेशमें नहीं) है सो हे जलचर यक्ष! आनन्दको प्राप्त होता है ११८॥ ७१॥

उत्तर–अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीहयमालयम्॥ शेषाः स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्य्यमतः परम्॥ ७२॥

अर्थ–(उत्तर) इस संसारमें नित्यप्रति प्राणियोंके समूह मृत्युको प्राप्त होतेहैं परन्तु जो कि शेष रहते हैं वे सदा स्थित रहनेकी इच्छा करतेहैं और संसारसे वैराग्ययुक्त होकर परमेश्वरमें दृढ प्रेम नहीं करतेहैं जो जन्म मरणसे मुक्तिको प्राप्त होवें इससे परे और क्या आश्चर्य है ११९॥ ७२॥

उत्तर–वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्॥ धर्म्म-

स्य तत्त्वं निहितं गुहायां महा जनोये-
न गतः स पन्थाः ॥ ७३ ॥

अर्थ-(उत्तर) सम्पूर्ण वेद प्रमाण हैं और स्मृति वाक्य प्रमाण हैं और एक मुनि नहीं कि जिसके वाक्यका प्रमाण होय किन्तु अनेक ऋषि मुनियोंके वाक्य भी प्रमाण हैं और धर्म्मका तत्त्व यथार्थ ज्ञानरूप प्रभाव हृदयमें स्थित है सो महात्मा श्रेष्ठ सज्जन पुरुष जिस मार्गसे गए हों वही मार्ग श्रेष्ठ है १२० ॥ ७३ ॥

उत्तर-अस्मिन्महामोहमये कटाहे सू-
र्य्याग्निना रात्रिदिवेन्धनेन॥दैवस्य द-
र्वीपरिघट्टनेन भूतानि कालः पचती-
तिवार्त्ता ॥ ७४ ॥

अर्थ-(उत्तर) इस महामोहमय संसाररूप-कडाहमें सूर्य्यरूप अग्नि और रात्रि दिनरूप-

इन्धन करके और देव(भाग्य) की दर्वी(करछुली) के परिघट्टन (चारों ओर चलानेसे) कालरूप पाककर्त्ता सर्व प्राणियोंको पकाता है अर्थात् वारंवार जन्म मरण प्राप्त होताहै यही संसारमें वार्त्ता है १२१ ॥ ७४ ॥

प्रश्न-व्याख्याता मे त्वया प्रश्ना यथा-
तथ्यं परंतप ॥ पुरुषं त्विदानीं व्या-
ख्याहि यश्च सर्वधनी नरः ॥ ७५ ॥

अर्थ-(प्रश्न) हे राजन् ! आपने मेरे प्रश्नोंके उत्तर यथायोग्य कहे परन्तु अब यह कहिये कि सबमें श्रेष्ठ धनी पुरुष कौन हैं ॥ ७५ ॥

उत्तर-दिवं स्पृशति भूमिं च शब्दः पु-
ण्येन कर्म्मणा॥ यावत्स शब्दो भवति
तावत्पुरुष उच्यते ॥ ७६ ॥

अर्थ-(उत्तर) जिसके पुण्यकर्म्मसे उत्पन्न

सुयश आकाश और पृथ्वीमें व्याप्त होता है ऐसा पुण्यवान् यशस्वी पुरुष उत्तम कहाता है ॥ ७६ ॥

उत्तर–तुल्ये प्रियाऽप्रिये यस्य सुखदुःखे तथैव च ॥ अतीतानागते चोभे सर्वः सर्वधनी नरः ॥ ७७ ॥

अर्थ–(प्रश्न) तथा प्रिय अप्रिय सुख दुःख भूत और भविष्य ये जिसको समान हैं वह सबमें अत्यंत श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष उत्तम धनी कहाताहै ॥ १२२ ॥ ७७ ॥

इति श्रीकानपूरप्रदेशांतरे स्थानगौरीलखाग्रामनिवासिवाजपेयिबलदेवप्रसादात्मजसरयूप्रसादशर्म्मकृतभाषाटीकासहिता प्रश्नोत्तरमुक्तावली समाप्ता ॥ शुभा ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्, प्रेस–बंबई.

विक्रय्यपुस्तकानि (नीतिग्रंथाः)

नाम.	की. रु. आ.
शुक्रनीति–भाषाटीकासहित जिसमें राजा राजपत्नी और राजकुमारोंके मुख्य धर्मकी रीति और प्रजापालनादि सेनारचना तथा राजप्रबन्ध उत्तम प्रकारसेहै ग्लेज १–१२रफ	१–८
चाणक्यनीति–भाषाटीका दोहासहित इसके देखनेसे मनुष्य नीतिकी उत्तम २ बातें जान सकते हैं	०–८
विदुरनीति–श्रीमहाराज धृतराष्ट्रको विदुरने उपदेश दिया है यशप्रश्नोंके सहित ...	०–४
विदुरप्रजागर–भाषा–(छंदबद्ध) कविता-देखनेही योग्य है	०–४
राजनीति पंचोपाख्यान–भाषामें विष्णुशर्मांके पंचतंत्रका भाषान्तर	०–७